भजन

तर्ज– ये जो हलका हलका सरूर है....

मयखाने में साकी होते हैं अक्सर,मेरे साकी में मयखाना है
मैं साकी की दीवानी हूं, साकी मेरा दीवाना है

साकी तेरे इश्के जहूर ने दीवाना रूह को बना दिया
तेरी इश्के नजरों के नूर ने दीवाना रुह को बना दिया
ये जो संजमें संजमें पिलाते हो,इसने संमलना सीखा दिया
तस्सवुर में तेरे जो दर्द है तेरी मय ने मीठा बना दिया

1 मेरे पिया तेरी रूहें तेरे मयखाने मे हैं
तरसें क्यूँ तलफें क्यूँ तेरे पैमाने तो हैं
हो..निगाहों से जो पिलाते थे,वो मय लौटा तो दो
तेरी नजरों में मेरी नजरों को खो जाने तो दो
साकी तेरी नजरे मयखाने में, मेरी मैं को तुमने मिटा दिया
2– सरकार ए साकी के हम ये पैमाने जो हैं
मय की चाहत में हैं बैठे तेरे मस्ताने ही हैं
हो..पैमानों को इन लबों से जरा टकराने तो दो
इन मय की मस्तियों में गुम हो जाने तो दो
तेरी जामें मस्ती में झूम के, मदहोशीयों को है पा लिया

3–साकी तेरी मुस्कनियां जाम छलका देती है
तिरछी निगाहों की नजरीया जिया मचला देती है
हो..बेकरारीयों में फंसी हैं रूहें इनको करार तो दो
आगोश में ले के रूह को पिया इश्के जाम पियो
साकी आज इतनी पिला दी के
मैं हूँ तुममें,तुम्हीं हो रूह में
मयखाना रूह को बना दिया

आसा पूरो सुख देओ,नए नए करूं सिनगार।
देओ पूरी मस्ती न बेहोशी,सुख लेऊं सब अंग समार।।